

Str. 1191, 21. *Calc.* Ausg. und die Handschriften: रोहिषे, die Scholien wie wir.

Str. 1193, 28. Die Scholien: मेघपर्यायो ऽम्बुधरत्वात्—मुस्तको ऽपि।

Str. 1194, 30. *Calc.* Ausg. तुलपो, *B.* लपो, *D. E.* डलपो, die Scholien wie wir. — 32. Die Scholien: तस्य इक्षोर्भेदा ज्ञातय एकादश।
आदिशब्दात्कोराद्याः। यद्वाचस्पतिः।

पुण्ड्रेष्णैः पुण्ड्रकः सेव्यपौण्ड्रकातिरसामधुः।

श्वेतं काण्डे भीरुकस्तु हरितो मधुरो महान् ॥

मूल्ये स्वरस्तु कान्तारः कोषकारस्तु वंशकः।

शतघोरस्त्रीषत्तारः पातच्छायो घनापसः ॥

सितनीलोषनेपालो वंशप्रायो महाबलः।

अन्वर्थस्तु दीर्घपत्त्रो दीर्घपर्वो कषायवान् ॥

काष्ठेक्षुस्तु स्वल्पकाण्डो घनग्रन्थिर्वनोद्भवः।

नीलघोरस्तु सुरसो नीलपीतलरात्रिवान् ॥

अनूपसंभवः प्रायः क्षनटी त्रिजुवालिकाः।

करं कशालिशकेक्षुः मूचिपत्त्रो गुडेक्षवः ॥

Str. 1195, 34. *Calc.* Ausg. und *D.* इषीको, die Scholien: इषीका।
— 38. Die Scholien: ह्यालाहलो ऽपि।

Str. 1196, 40. *Calc.* Ausg. काकालो।

Str. 1197, 41. *Calc.* Ausg. und die Handschriften: कुष्ठ। — *Calc.*
Ausg. und *D.* वालूक।

Str. 1198, 43. *D.* सात्थक, die Scholien: सात्तुक।

Str. 1199, 45. *Calc.* Ausg. गौतमाः, *D.* गोतमाः, die Scholien
wie wir. — 46. Die Scholien: सर्वे ऽपि स्थावरवनस्पतिभवत्वात्स्थाव-
रविषस्य ज्ञातय इति।